ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 214-215**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

आध्यात्मिक राष्ट्रवादी नेताः महर्षि अरविंद घोष

श्रीमती निर्मला सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर– इतिहास, ठा. बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला– फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-27.05.2025, Revised-06.06.2025, Accepted-13.05.2025 **E-mail :singhnirmala68@gmail.com**

सारांशः ***भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में ऐसे अनेक महानायक हुए, जिन्होंने अपनी बुद्धि, साहस और विचारों से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की थी। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले अमर शहीदों में महर्षि अरविंद घोष का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अरबिंदो घोष न केवल स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे, बल्कि एक क्रांतिकारी, दार्शनिक, योगी, कवि ,और आध्यात्मिक गुरु भी थे, उनका जीवन भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का प्रतीक है। अरबिंद घोष का जन्म 15 अगस्त, 1872 को कोलकाता के एक शिक्षित और समृद्ध परिवार में हुआ था। उन्होंने 1890 में भारतीय सिविल सेवा के लिए खुली प्रतियोगिता उत्तीर्ण की, लेकिन भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने की इच्छा के कारण, वे घुड़सवारी परीक्षा में जानबूझकर असफल हो गए और वे 1893 में भारत लौट आए। 1905 में बंग भंग आंदोलन से अरविंद घोष ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश किया। वे अखिल भारतीय कांग्रेस के उदारवादी खेमे के कट्टर विरोधी थे, उन्होंने उग्रवादी विचारों के समर्थक लाला लाजपतराय, विपिन चन्द्र पाल और बाल गंगाधर तिलक के विचारों और कार्यों का सदैव समर्थन किया। उन्होंने 'वंदे मातरम' समाचार पत्र का संपादन किया, जिसमें ब्रिटिश शासन की भारत विरोधी नीतियों की तीव्र आलोचना की जाती थी। 1908 में 'अलीपुर बम कांड' में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और उन्हें एक वर्ष की जेल हुई। जेल से रिहा होने के बाद, उन्होंने 1910 में पांडिचेरी में आध्यात्मिक आश्रम की स्थापना की। उन्होंने वेद उपनिषद भागवत गीता और हिंदू देवी देवताओं को एक नई दृष्टिकोण से देखा और हिंदू धर्म और हिंदू देवी देवताओं को भारत माता की गुलामी से जोड़ कर आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। 5 दिसंबर 1950 को महर्षि अरविंद घोष का निधन हो गया ,महर्षि अरविंद का जीवन , स्वतंत्रता संघर्ष और उनके विचार आज भी हमारे बीच जीवित है इस शोध पत्र में महर्षि अरविंद घोष की आध्यात्मिक राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द–स्वतंत्रता , इतिहास ,प्रतियोगिता , उपलब्धियां, क्रांतिकारी, पुनर्जागरण ,विस्फोटक, राष्ट्रीयता ।

अध्ययन का उद्देश्य– अरविंद घोष भारतीय पुनर्जागरण काल के उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने अपने लेखों के माध्यम से राष्ट्रवादी चेतना को पुष्ठित करने और जनसाधारण को स्वतंत्रता संघर्ष के लिए प्रेरित करना ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। देश की युवा पीढ़ी के समक्ष महर्षि अरविंद घोष के संघर्षशील जीवन, क्रांतिकारी और आध्यात्मिक राष्ट्रवादी विचारों को प्रस्तुत करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन की पद्धति– महर्षि अरविंद घोष के जीवन, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका, क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी विचारों का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। महर्षि अरविन्द के रचनात्मक कार्यों को विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकों से एकत्रित करके विश्लेषण करने के पश्चात इस प्रस्तुत शोध पत्र में संकलित किया गया है।

प्रस्तावना– भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाली अमर शहीदों में महर्षि अरविंद घोष का नाम उल्लेखनीय है। अरबिंद घोष ने एक क्रांतिकारी, दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता, लेखक और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अरबिंद घोष का जन्म 15 अगस्त, 1872 को कोलकाता के एक शिक्षित और समृद्ध परिवार में हुआ था। उनके पिता डॉ. कृष्णधुन घोष एक सिविल सर्जन और माता स्वर्णलता देवी एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं। श्री अरबिंद घोष की प्रारंभिक शिक्षा दार्जिलिंग के एक ईसाई कॉन्वेंट स्कूल में शुरू हुई और 7 वर्ष की आयु में मैनचेस्टर इंग्लैंड में सेंट पॉल स्कूल से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की तथा उच्च शिक्षा लंदन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के किंग्स कॉलेज से विशेष शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ प्राप्त की। उन्होंने 1890 में भारतीय सिविल सेवा के लिए खुली प्रतियोगिता उत्तीर्ण की, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने की इच्छा होने के कारण घुड़सवारी परीक्षा में जानबूझकर असफल हो गये। वे 1893 में भारत लौट आए ,उन्होंने 1896 से 1905 तक बड़ौदा रियासत में प्राध्यापक, वाइस प्रिंसिपल, निजी सचिव आदि के पद पर योग्यता पूर्वक कार्य किया।

अरविंद घोष का राजनैतिक जीवन 1905 में बंग भंग आंदोलन से आरंभ हुआ। उन्होंने 'वंदे मातरम' समाचार पत्र का संपादन किया और उसमें ब्रिटिश शासन की भारत विरोधी नीतियों की तीव्र आलोचना की । उन्होंने भारतीयों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए क्रांतिकारी मार्ग अपनाने का आग्रह किया। अरबिंद घोष ने अपने भाई बारीन्द्र घोष के साथ मिलकर अनुशीलन समिति नामक एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।समिति ने अपने संकल्प से प्रेरित होकर बम विस्फोट और डकैतियों की ओर रुख किया, ताकि अंग्रेजों को भारतीय क्रांतिकारियों की ताकत दिखा सके। 1908 में 'अलीपुर बम कांड' में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया और जेल में उन्होंने भागवत गीता एवं अन्य आध्यात्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। महर्षि अरविंद पर कोई आरोप सिद्ध न होने के कारण एक वर्ष बाद ही ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल से रिहा कर दिया ।1910 में जब अंग्रेजों ने उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाने की कोशिश की। तो वे फ्रांसीसी उपनिवेश पांडिचेरी चले गए, वहां उन्होंने 1910 में श्री अरविंद आश्रम' के नाम से एक आध्यात्मिक आश्रम की स्थापना की। जहां महर्षि अरविंद ने वेद, उपनिषद, भागवत गीता और हिंदू देवी देवताओं को एक नई दृष्टिकोण से देखा और हिंदू धर्म और हिंदू देवी देवताओं को भारत माता की गुलामी से जोड़ कर आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। 5 दिसंबर 1950 को अरविंद घोष का निधन हो गया, लेकिन उनका जीवन, भारत की स्वतंत्रता के लिए किए गए कार्य और विचार आज भी हमारे बीच जीवित है।

अरविंद घोष का आध्यात्मिक राष्ट्रवाद– अरविंद घोष भारतीय पुनर्जागरण काल के उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए भारतवासियों को जागृत करने का कार्य किया। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से राष्ट्रवादी चेतना को प्रसारित करने का कार्य किया। जनसाधारण को स्वतंत्रता संघर्ष के लिए प्रेरित करना ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। अरविंद घोष का मानना था कि ''स्वतंत्रता ईश्वर की ओर से दिया गया उपहार है, स्वतंत्रता कोई कृपा नहीं है, बल्कि यह हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, जो किसी अन्य सरकार के द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, उनका यह विचार 20 वीं सदी के राष्ट्रवाद के लिए एक क्रांतिकारी अवधारणा थी।'' अरविन्द घोष ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समाचार पत्र 'इन्दु प्रकाश' में लेख लिखने से

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

आरम्भ किये। उनके 'पुराने दीपकों के स्थान पर नए दीपक' (छमू स्ंउचे थ्वत व्सक) नामक शीर्षक के अन्तर्गत लिखे गए, सात लेखों की जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई थी, इस लेख माला में एक के बाद एक अनेक विस्फोटक लेख लिखे गए। समाचार पत्र 'वंदे मातरम ' में भी अरविंद के लेखों का निरंतर प्रकाशन होने लगा। उनके लेखों के निरंतर प्रकाशन के कारण 'वंदे मातरम' सुर्खियों में रहने लगा। महर्षि अरविंद उग्र राष्ट्रीयता के प्रखर व्याख्याता के रूप में राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र में आ गए। 'वंदे मातरम' में महर्षि अरविंद के लिखे लेखों ने देशभक्ति और राष्ट्रीयता की ऐसी लहर पैदा कर दी, कि ब्रिटिश सरकार को 'वंदे मातरम 'को बार–बार प्रतिबंधित करना पड़ा। महर्षि अरविंद ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान करने के लिए 'कर्म योगी और धर्म' जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन आरंभ किया।

उन्होंने राष्ट्रवाद को एक नया रूप प्रदान किया। महर्षि अरविंद का राष्ट्रवाद राजनीतिक राष्ट्रवाद ना होकर आध्यात्मिक राष्ट्रवाद था। अरविंद ने 'वंदे मातरम' में लिखा था ''राष्ट्रवाद क्या है, राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है, राष्ट्रवाद तो एक धर्म है, जो ईश्वर के पास से आया है और जिसे लेकर आपको जीवित रहना है, हम सभी लोग ईश्वरीय अंश के साधन हैं।'' महर्षि अरविंद श्रीमद्भागवत गीता, उपनिषद ,रामायण एवं महाभारत में प्रस्तुत आदर्शों एवं व्यक्तियों से बहुत प्रभावित थे और इन ग्रंथों में व्यक्त आदर्शों और व्यक्तियों को, अरविंद अपने विचारों में महत्वपूर्ण स्थान देते थे । उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को बिट्रिश सरकार के विरुद्ध धर्म युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया। जिस प्रकार श्रीमद्भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को धर्म युद्ध करने के लिए प्रेरित किया, उसी तरह महर्षि अरविंद ने भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध भारतीयों को संगठित होकर नैतिक बल द्वारा संघर्ष करने का प्रेरित किया। वे अपने देश भारत पर अंग्रेजी राज के घोर विरोधी थे तथा इसे भारत से संपूर्ण नष्ट करना चाहते थे। उनका मानना था कि ''क्रांति केवल हथियारों से नहीं होती, आत्मिक जागरण से भी होती है, यदि भारत को स्वतंत्रता चाहिए, तो उसकी जनता को अपने आत्मबल, संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करना होगा।''

वे भारत को केवल एक देश अथवा भौगोलिक इकाई ही नहीं मानते थे , वे भारत को देवी मां के रूप में देखते थे। महर्षि अरविंद का कहना था ''मैं स्वदेश को मां मानता हूं। मां के रूप में उसकी भक्ति करता हूं। पूजा करता हूं, मां की छाती पर बैठकर यदि कोई राक्षस रक्तपात करने के लिए उद्यत हो, तो भला पुत्र क्या करता है, निश्चिंत होकर भोजन करने , स्त्री पुत्र के साथ आमोद प्रमोद करने बैठ जाता है या मां के उद्धार करने के लिए दौड़ पड़ता है।'' महर्षि अरविंद ने देशवासियों को भारत माता की रक्षा और सेवा करने के लिए सभी प्रकार के कष्टों को सहने की मार्मिक अपील की। उन्होंने भारतीयों से कहा कि ''भारत माता सदियों से अपनी संतानों को पालने में झुलाती रही है और उनका पालन पोषण करती रही है, पर दुर्भाग्य से आज वह विदेशी अत्याचारों की बेड़ियों में जकड़ी कराह रही है, उसका स्वाभिमान नष्ट हो चुका है , भारत माता के सपूतों का कर्तव्य है कि वह मां की गुलामी की बेड़ियां काटकर फेकें।'' अपने उग्र राष्ट्रवादी विचारों के कारण महर्षि अरविंद उग्र राष्ट्रीयता के प्रखर व्याख्याता के रूप में राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र में आ गए।

राष्ट्रीय आन्दोलन को तीव्र और प्रखर बनाने वाले महर्षि अरविंद से अंग्रेज इतने घबरा गए कि अगस्त 1908 में उन्हें अलीपुर बम कांड में गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर कोई अभियोग सिद्ध ना होने पर एक वर्ष बाद उन्हें रिहा कर दिया गया । जेल में उनके जीवन में एक नया मोड़ आया, उन्होंने इस अवधि में उन्होंने गीता और योग दर्शन का गहन अध्ययन किया। जेल से रिहा होने के बाद अरविंद ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया और उन्होंने 1910 में पांडिचेरी में 'श्री अरविंद आश्रम' के नाम से एक आध्यात्मिक आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम में उन्होंने वेद उपनिषद भागवत गीता और योग सूत्रों का गहन अध्ययन किया । उन्होंने पारंपरिक भारतीय शास्त्र को एक नए दृष्टिकोण से देखा और उसे आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया, उन्होंने अपना जीवन योग और ध्यान में समर्पित कर दिया। उन्होंने ' पूर्ण योग' (प्दजमहतंस लवह) का दर्शन विकसित किया, जो आत्मा, मन, समाज, और राष्ट्र के समग्र विकास की बात करता है। 5 दिसंबर 1950 को महर्षि अरविंद घोष का निधन हो गया लेकिन उनके उनकी विचारधारा आज तक जीवित है।

निष्कर्ष– महर्षि अरविंद घोष एक प्रकाश पुंज की भाँति पहले भारत के राजनीतिक व कालान्तर में आध्यात्मिक क्षितिज को आलोकित करते रहे। भारतीय राजनीति में अपनी 4–5 वर्षों की सक्रियता में ही उन्होंने अपनी प्रखर देशभक्ति व दूरदर्शिता से नई पीढ़ी को उत्साह व कर्मठता से भर दिया। राजनीतिक जीवन का परित्याग करने के बाद वे योग–साधना के बल पर दर्शन, साहित्य और आध्यात्मिक क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर आसीन हुए। अरविंद घोष एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं थे, वह एक युगदृष्टा थे, उनका विचार था कि सच्ची आजादी केवल राजनीतिक नहीं बल्कि आत्मिक भी होनी चाहिए। उन्होंने भारतीयता की आत्मा को न केवल पुनर्जीवित किया, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर भी प्रतिष्ठित किया ।अरबिंदो घोष न केवल स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे, बल्कि एक क्रांतिकारी, दार्शनिक, योगी, कवि और आध्यात्मिक गुरु भी थे, उनका जीवन भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का प्रतीक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. श्री अरविंद गीता पर निबंध पांडिचेरी श्री अरविंद आश्रम 1922.
2. निरोद रंजन बारन –श्री अरविंद के संवाद, पांडिचेरी श्री अरविंद आश्रम 2001.
3. पीटर हीस – श्री अरविंद का जीवन चरित, न्यूयॉर्क कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस 2018.
4. आर सी मजूमदार – भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास , नई दिल्ली ,फर्मा केएलएम 1963.
5. श्री अरविंद घोष – वंदे मातरम लेख संग्रह (1906 –1908) कोलकाता आर्य पब्लिकेशन हाउस 1945.
6. के डी चट्टोपाध्याय– श्री अरविंद और नव चेतना ,नई दिल्ली भारतीय विद्या भवन 1975.
7. के आर एस आयंगर , श्री अरबिंदो एक जीवनी और एक इतिहास , पांडिचेरी 1972
8. सच्चिदानंद मोहंती (2008) श्री अरविंदो एक समकालीन पुस्तक (एक संस्करण) नई दिल्ली रूटलेज पृष्ठ संख्या– 36
9. सर युग यादव (2007) श्री अरविंदो का जीवन मन और कला , सरूप एंड सन्स
10. शर्मा रामनाथ (1991) श्री अरविंदो का सामाजिक विकास का दर्शन ,अटलांटिक पब्लिशर्स 2024
11. हचजर मेयर बिलफ्रेड (2016) श्री अरविंदो और यूरोपीय दर्शन, प्रिज्म औरोविले।

*****